*ॐ*

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—14/04/2021 मंत्र -प्रेमचंद

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

एन सी ई आर टी पर आधारित

**मंत्र**

**-प्रेमचन्द**

कैलाश ने कहा, “नहीं, कल जरूर दिखा दूँगा। इस वक्त अच्छी तरह दिखा भी न सकूँगा, कमरे में तिल रखने की भी जगह न मिलेगी।”

एक महाशय ने छेड़कर कहा, “दिखा क्यों नहीं देते, जरा-सी बात के लिए इतना टाल-मटोल कर रहे हो ?" दूसरे महाशय ने कहा, “मिस गोविंद इतनी सीधी और भोली है, दूसरी सुंदरी होती तो इसी बात पर बिगड़ खड़ी होती।” तीसरे साहब ने मजाक उड़ाया, “अजी बोलना छोड़ देती।” मृणालिनी ने देखा कि ये शोहदे उसे रंग पर चढ़ा रहे हैं तो बोली, “आप लोग मेरी वकालत न करें, मैं खुद अपनी वकालत कर लूँगी। मैं इस वक्त साँपों का तमाशा नहीं देखना चाहती। चलो, छुट्टी हुई।” इस पर मित्रों ने ठहाका लगाया। एक बोले, “देखना तो आप सब कुछ चाहें, पर कोई दिखाए भी तो। "
~~~~~~~~~~

कैलाश को मृणालिनी की झेंपी हुई सूरत देखकर मालूम हुआ कि इस वक्त उसका इनकार वास्तव में उसे बुरा लगा है। ज्यों ही प्रीतिभोज समाप्त हुआ और गाना शुरू हुआ, उसने मृणालिनी और अन्य मित्रों को साँपों के दरबे के सामने ले जाकर महुअर बजाना शुरू किया। फिर एक-एक खाना खोलकर एक-एक साँप को निकालने लगा। वाह! क्या कमाल था? ऐसा जान पड़ता था कि वे कीड़े उसकी एक-एक बात, उसके मन का एक-एक भाव समझते हैं। किसी को उठा लिया, किसी को गरदन में डाल दिया, किसी को हाथ में लपेट लिया। मृणालिनी बार-बार मना करती कि उन्हें गरदन में न डालो, दूर से ही दिखा दो। बस जरा नचा दो। कैलाश की गरदन में साँपों को लिपटते देखकर उसकी जान निकल जाती थी। पछता रही थी कि मैंने व्यर्थ ही इनसे दिखाने को कहा, मगर कैलाश न सुनता था। प्रेमिका के सम्मुख अपने सर्प-कला-प्रदर्शन का ऐसा अवसर पाकर वह कब चूकता। एक मित्र ने टीका की, “दाँत तोड़ डाले होंगे। "

कैलाश हँसकर बोला, “दाँत तोड़ डालना मदारियों का काम है। किसी के दाँत नहीं तोड़े गए हैं, कहिए तो दिखा दूँ?” कहकर उसने एक काले साँप को पकड़ लिया और बोला, “मेरे पास इससे बड़ा और जहरीला साँप दूसरा नहीं है। अगर किसी को काट ले, तो आदमी आनन-फानन में मर जाए। लहर भी न आए। इसके काटे का कोई मंत्र नहीं। इसके दाँत दिखा दूँ!” मृणालिनी ने उसका हाथ पकड़कर कहा, “नहीं-नहीं कैलाश, ईश्वर के लिए उसे छोड़ दो। तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ।" इसके बाद वह महफिल में चली गयी। इस पर दूसरे मित्र बोले, “मुझे तो विश्वास नहीं आता, लेकिन तुम कहते हो तो मान लूँगा।"

कैलाश ने साँप की गरदन पकड़कर कहा, “नहीं साहब, आप आँखों से देखकर मानिए। दाँत तोड़कर वश में किया तो क्या किया! साँप बड़ा समझदार होता है। अगर उसे विश्वास हो जाए कि इस आदमी से मुझे कोई हानि न पहुँचेगी, तो वह उसे हरगिज न काटेगा।”

उसने साँप की गरदन पकड़कर जोर से दबायी, इतनी जोर से दबायी कि उसका मुँह लाल हो गया, देह की सारी नसें तन गयीं। साँप ने अब तक उसके हाथों ऐसा व्यवहार न देखा था। उसकी समझ में न आता था कि यह मुझसे क्या चाहते हैं। उसे शायद भ्रम हुआ कि यह मुझे मार डालना चाहते हैं, अतएव वह आत्मरक्षा के लिए तैयार हो गया।

कैलाश ने उसकी गरदन खूब दबाकर मुँह खोल दिया और उसके जहरीले दाँत दिखाते हुए बोला, “जिन सज्जनों को शक हो, आकर देख लें। आया विश्वास या अब भी कुछ शक है?" मित्रों ने आकर उसके दाँत देखे और चकित हो गए। प्रत्यक्ष प्रमाण के सामने संदेह का स्थान कहाँ ? मित्रों का शंका-निवारण करके कैलाश ने साँप की गरदन ढीली कर दी और उसे जमीन पर रखना चाहा पर वह काला गेहुँवन क्रोध से पागल हो रहा था। गरदन नरम पड़ते ही उसने सिर उठाकर कैलाश की उँगली में जोर से काटा और वहाँ से भागा। कैलाश की उँगली से टप-टप खून टपकने लगा। उसने जोर से उँगली दबा ली और अपने कमरे की तरफ दौड़ा।

वहाँ मेज की दराज में एक जड़ी रखी हुई थी, जिसे पीसकर लगा देने से घातक विष भी रफू हो जाता था। मित्रों में हलचल बढ़ गयी, बाहर महफिल में भी खबर हुई। डॉक्टर साहब घबराकर दौड़े। फौरन उँगली की जड़ कसकर बाँधी गयी और जड़ी पीसने के लिए दी गयी। डॉक्टर साहब जड़ी के नहीं मानने वाले थे। वह उँगली का डसा भाग नश्तर से काट देना चाहते थे मगर कैलाश को जड़ी पर पूर्ण विश्वास था। मृणालिनी पियानों पर बैठी हुई थी। यह खबर सुनते ही दौड़ी और कैलाश की उँगली से टपकते हुए खून को रूमाल से पोंछने लगी। जड़ी पीसी जाने लगी, पर उसी एक मिनट में कैलाश की आँखें झपकने लगीं, ओठों पर नीलापन दौड़ने लगा।

इतने में जड़ी पिसकर आ गयी। मृणालिनी ने उँगली पर लेप किया। एक मिनट और बीता। कैलाश की आँखें बंद हो गयी। वह लेट गया और हाथ से पंखा झलने का इशारा किया। माँ ने दौड़कर उसका सिर गोद में रख लिया और बिजली का टेबल- फैन लगा दिया।

डॉक्टर साहब ने झुककर पूछा, “कैलाश, कैसी तबियत है?" कैलाश ने धीरे से हाथ उठा दिया मगर कुछ बोल न सका। मृणालिनी ने करुण स्वर में कहा, "क्या जड़ी कुछ असर न करेगी?" डॉक्टर साहब ने सिर पकड़कर कहा, “क्या बताऊँ, मैं इसकी बातों में आ गया। अब तो नश्तर से भी कुछ फायदा न होगा।”

कैलाश की दशा प्रतिक्षण बिगड़ती जा रही थी। यहाँ तक कि उसकी आँखे पथरा गयी, हाथ-पाँव ठंडे हो गये, मुख की कांति मलिन पड़ गयी, नाड़ी का कहीं पता नहीं, मौत के सारे लक्षण दिखाई देने लगे। घर में कुहराम मच गया। मृणालिनी एक ओर सिर पीटने लगी, माँ अलग पछाड़े खाने लगी। डॉक्टर चड्ढा को मित्रों ने पकड़ लिया, नहीं तो वह नश्तर अपनी गरदन में मार लेते।

एक महाशय बोले, "कोई मंत्र झाड़नेवाला मिले, तो संभव है अभी भी जान बच जाए। " डॉक्टर चड्ढा बोले, “मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गया था कि इसकी बातों में आ गया। नश्तर लगा देता, तो यह नौबत क्यों आती? बार-बार समझाता रहा कि बेटा साँप न पालो मगर कौन सुनता था ? बुलाइए, किसी झाड़-फूँक करने वाले को ही बुलाइए। मेरा सब कुछ ले ले, मैं अपनी सारी जायदाद उसके पैरों पर रख दूँगा, लंगोटी बाँधकर घर से निकल जाऊँगा मगर मेरा कैलाश, मेरा प्यारा कैलाश उठ बैठे। ईश्वर के लिए किसी को बुलवाइए।"

क्रमशः

छात्र कार्य-कहानी का वाचन करें एवं समझें।